Visit **Dwarkadheeshvastu.com** For

FREE **Vastu Consultancy, Music, Epics, Devotional Videos**
Educational Books, Educational Videos, Wallpapers

****

All Music is also available in **CD** format. **CD Cover** can also be print with your Firm Name

****

We also provide this whole Music and Data in **PENDRIVE** and **EXTERNAL HARD DISK.**

Contact : Ankit Mishra (+91-8010381364, dwarkadheeshvastu@gmail.com)

AA Jhgfj AA

vFk Ǝh nxk Ǽ ikB lqukf l) egkfo|k ikB

¼ fgUnh ½

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती

✿ श्रीमहाविद्या यंत्रपूजा ✿

अपवित्र० ॥ ऊँ अपवित्रादि मंत्र से भूमि और आसन की शुद्धि करके संकल्प करें-अद्येत्यादिऽमुकगोत्रेऽमुकराशेऽमुकशर्माऽहं मम पराक्रम दुर्विक्षया कर्मजन्यदुर्ग्रहपीड़ा अष्टविधा निवारणाय अथच सर्वदैव सर्वादि व्याधि निरूत्पत्तये दुर्भिक्षया दुःखनिवृतये सुभिक्षप्राप्तयेमहामायाद्युपचये वनीरुपचये सुभिक्षप्राप्तये तथा च डाकिनीशाकिनी भूत प्रेतपिशाच ब्रह्मराक्षसः नृसिंह भैरवमातृकादिगणसंतुष्टये सर्वश्रेयस्कामनया ऋष्टाऋष्ट खंडनं श्रीभगवतिप्रसन्नकरणार्थे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी महासरस्वतीमहाविद्यायंत्रपूजन कर्माऽहं करिष्ये॥

अथ पूजाविधानम्-

श्रीमत्सुराराध्य चरणांभोरुहद्वयी। चराचरजगद्धात्री चण्डिकाप्रणमाम्यहम्॥

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातियतोनिदहाति वेदः।

सनः पर्षदति दुर्गाणिविश्वानावेवसिंधुदुरिता त्यग्निः॥

॥ इतिमूलम्॥

अथन्यासः (नीचे दिये वाक्यों को पढ़कर निर्दिष्ट स्थानों का दाहिने हाथ की अंगुलियों से स्पर्श करें) ॥ **ॐ जात शिखायाम्** (शिखा पर)। **ॐ वेदसे ललाटे** (माथे पर)। **ॐ सुनवाम कर्णयोः** (दोनों कानों पर)। **ॐ सोम नासिकायाम्** (नाक पर)। **ॐ अराति चक्षुषोः** (दोनों नेत्रों पर)। **ॐ यत ओष्ठयोः** (दोनों ओठों पर)। **ॐ नि दतेषु** (दांतों पर)। **ॐ ददाति तालोः** (तालु प्रदेश पर)। **ॐ वेद जिह्वायाम्** (जिह्वा पर)। **ॐ स ग्रीवायाम्** (गर्दन पर)। **ॐ न बाह्वोः** (दोनों भुजाओं पर)।

ॐ पर्ष हृदि (हृदय में)। ॐ अति स्तनयोः (दोनों स्तनों पर)। ॐ दुःकुक्षौ (दोनों कुक्षों में)। ॐ गाणिः नाभौ (नाभि प्रदेश में)। ॐ विश्वा पृष्ठे (पीठ पर)। ॐ नावेव वृषणयोः (दोनों वृषणों पर)। ॐ सिंधुः शिश्ने (लिंग पर)। ॐ दुःकट्याम् (कमर पर)। ॐ इत उर्वोः (दोनों उर्वो पर)। ॐ अति जंघयोः (दोनों जांघो पर)। ॐ अग्निपादयोः (दोनों पैरों पर ॥

॥ इत्यङ्गन्यासः ॥

अथ हृदयादि षडन्यासः ॥

ॐ जातवेदसे सुनवामहृदयायनमः। सोममरातीयतोः शिरसे स्वाहा। निदहातिवेदः शिखायैवषट्। सनः पर्षदति दुर्गाणि कवचाय हुँ । विश्वानावेव सिंधु नेत्राभ्यांवौषट्। दुरितात्यग्नि अस्त्रायफट्।

॥ इति हृदयादिन्यासः ॥

अथ करादि षड्ङ्गन्यास:॥

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नम: (दोनों अंगूठों का आपस में स्पर्श करें)। **ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नम:** (दोनों तर्जनियों को परस्पर स्पर्श करें)। **ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नम:** (दोनों मध्यमाओं का परस्पर स्पर्श करें)। **ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नम:** (दोनों अनामिकाओं अंगुलियों का परस्पर स्पर्श करें)। **ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नम:** (दोनों कनिष्ठिकाओं का परस्पर स्पर्श करें)। **ॐ ह्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां नम:** (दाहिने हाथ को बायें हाथ के पृष्ठ पर स्पर्श करें)

॥ इति करादिन्यास:॥

अथ हृदयादिन्यास: ॥

ॐ ह्रॉं हृदयाय नम: (हृदय पर)। **ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा** (सिर पर)। **ॐ ह्रूं शिखायै वषट्** (शिखा पर)। **ॐ ह्रैं कवचाय हुम्** (दोनों कन्धों पर)। **ॐ ह्रौं**

नेत्राभ्यां वौषट् (दोनों नेत्रों पर)। ॐ ह्रः अस्त्रायफट् (दाहिने हाथ को सिर से घुमाकर मध्यमा व तर्जनी से बायें हाथ की हथेली पर ताली बजायें)

॥ इति हृदयादिन्यासः॥

अथ मातृकान्यासः सयथा ॥

ॐ अं नमः ललाटे (माथे पर)। ॐ आँ नमः मुखवृत्ते (दोनों ओठों के बीच)। ॐ इं नमः दक्षिणनेत्रे (दायीं आँख पर)। ॐ ईं नमः वामनेत्रे (बायीं आँख पर)। ॐ उं नमः दक्षिण कर्णे (दायें कान पर)। ॐ ऊं नमः वामकर्णे (बायें कान पर)। ॐ ऋं नमः दक्षिणनासिकायां (दाहिने नाक पर)। ॐ ॠं नमः वामनासिकायां (बायें नाक पर)। ॐ लृं नमः दक्षिणगंडे (दाहिने गाल के नीचे)। ॐ लॄं नमः वामगंडे (बायें गाल के नीचे)। ॐ एं नमः ऊर्ध्वोष्टे(ऊपर के ओंठ पर)। ॐ ऐं नमः अधरोष्टे (नीचे के ओंठ पर)। ॐ ओं नमः ऊर्ध्वदंतपंक्तौ (ऊपरी दंतपंक्ति पर)। ॐ औं नमः

अधोदंतपंक्तौ (नीचे की दंतपक्ति पर)। **ॐ अं नमः शिरसि** (सिर पर)। **ॐ अः नमः मुखे** (मुख पर)। **ॐ कं नमः दक्षिणबाहुमूले** (दाहिने भुजा पर)। **ॐ खं नमः दक्षिणकरपुटे** (दाहिने हथेली पर)। **ॐ गं नमः दक्षिणमणिबंधे** (दाहिने मणि-बंध पर)। **ॐ घं नमः दक्षांगुलिमूले** (दाहिने अंगुलियों के मूल में)। **ॐ ङं नमः दक्षांगुलि अग्रे** (दाहिने हाथ की अंगुलियों के अग्रभाग में)। **ॐ चं नमः वामवाहुमूले**(बायीं भुजा के मूल में)। **ॐ छं नमः वामकरपुटे** (बायीं हथेली पर)। **ॐ जं नमः वाममणिबंधे** (बायीं कलाई पर)। **ॐ झं नमः वामांगुलिमूले** (बायीं अंगुलियों के मूल में)। **ॐ ञं नमः वामांगुल्यग्रे** (बायें अंगुलियों के आगे)। **ॐ टं नमः दक्षिणपादमूले** (दायें पैर के मूल में)। **ॐ ठं नमः दक्षिणजानुनि** (दायें घुटने पर)। **ॐ डं नमः दक्षिणगुल्फे** (दाहिने टखने पर)। **ॐ ढं नमः दक्षिण पादांगुलिमूले** (दायीं पैर की अंगुलियों के जड़ पर)। **ॐ णं नमः दक्षिणपादांगुल्यग्रे**

(दायें पैर के अंगुलियों के आगे भाग में)। **ॐ तं नमः वामपादमूले** (बायें पैर के मूल में)। **ॐ थं नमः वामजानुनि** (बायें घुटने पर)। **ॐ दं नमः वामगुल्फे** (बायें पैर के टखने पर)। **ॐ धं नमः वामांगुलिमूले** (बायें अंगुली की मूल में)। **ॐ नं नमः वामांगुल्यग्रे** (बायें अंगुली के अग्र भाग पर)। **ॐ पं नमः दक्षिणपार्श्वे** (दायें बगल पर)। **ॐ फं नमः वामपार्श्वे** (बायें बगल पर)। **ॐ बं नमः पृष्टे** (पीठ पर)। **ॐ भं नमः नाभौ** (नाभि पर)। **ॐ मं नमः जठरे** (पेट पर)। **ॐ यं नमः हृदि** (हृदय पर)। **ॐ रं नमः दक्षिणास्ये** (मुँह के दाहिने भाग पर)। **ॐ लं नमः ककुदि** (धरती पर)। **ॐ वं नमः वामास्ये** (मुँह के बायें भाग पर)। **ॐ शं नमः हृदयादि दक्षिणहस्तान्ते** (हृदय की ओर दाहिने हाथ की कलाई पर)। **ॐ षं नमः हृदयादिवामहस्तान्ते** (हृदय और बायें हाथ की कलाई पर) **ॐ सं नमः हृदयादि दक्षिणपादान्ते** (हृदय और दाहिने पैर के तलवे पर)। **ॐ हं नमः हृदयादिवामपादान्ते**

(हृदय एवं बायें पैर के तलवे पर)। **ॐ ज्ञ नमः जठरे** (हृदय पर)। **ॐ क्षं नमः मुखेप्रणवादिः** (मुँह के ऊपर)। **ॐ त्रं नमः सर्वत्रे** (चारों तरफ पानी छिड़कें)। इस प्रकार मुद्राया मातृका न्यास करें, न्यास के पश्चात पूजा करें) प्रत्येक मंत्र को पढकर पंचोपचार से पूजा करें।

तत्वमुडयामातृकान्यास कुर्यात् इतिन्यासंकृत्वा पूजनं कुर्यात् ॥

ॐ हाँ ग्राँ श्री गणपतये नमः । ॐ हीं क्षौं क्षेत्रपालाय नमः । ॐ हीं श्रीं तीक्ष्णश्रृंगाय महिषाय नमः । ॐ हीं श्रीं वनस्पतिपुत्राय सिंहाय नमः ॥ इस प्रकार द्वारपालों का पूजन कर गुरुओं का पूजन करें। **॥ ॐ गुं गुरवे नमः । ॐ परमेगुरवे नमः । ॐ परमेष्टि गुरवे नमः । ॐ परमाचार्य्याय नमः । ॐ आदिसिद्धेभ्यो नमः ॥ इति गुरु पूजा ॥ ॐ हीं श्रीं विष्णवे नमः । ॐ हीं श्रीं वैष्णवे नमः । ॐ हीं श्रीं रुद्राय नमः । ॐ हीं श्रीं रुद्रायाये नमः । ॐ हीं श्रीं ब्रह्मणे नमः । ॐ हीं श्रीं**

ब्रह्मणे नमः। इतिपूर्वे ॥ ॐ ह्रीं श्रीं कोमार्यै नमः । ॐ ह्रीं श्रीं ऐंद्रयाय नमः। ॐ ह्रीं श्रीं वाराह्यै नमः॥ इत्युत्तरे ॥ ॐ ह्रीं श्रीं चण्डिकायै नमः। ॐ ह्रीं श्रीं चामुण्डायै नमः। ॐ ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यैनमः इति पश्चिमे ॥ ॐ ह्रीं श्रीं चामुण्डे नमः। ॐ ह्रीं श्रीं चंडुमूर्त्यै नमः। ॐ ह्रीं श्रीं नमो भगवतिमहादुर्गेचण्डिकात्यायनी नमः॥ इति मूलत्रयम् ॥ ॐ नमः पिशितशिनिकिनि त्रिशूलखड्गहस्तेसिंहारूढे एहि एहि आगच्छ-आगच्छ बलिपूजां गृह गृह सिद्धिं कुरु कुरु । ॐ ह्रीं श्रीं चण्डिकायै नमः। ॥ इत्यावाहनम् ॥ ॐ ह्रीं श्रीं विन्ध्यवासिन्यै नमः। ॐ ह्रीं श्रीं रक्तदंतिकायै नमः। ॐ ह्रीं श्री शताक्ष्यै नमः। ॐ ह्रीं श्रीं शाकंभर्य्यै नमः। ॐ ह्रीं श्रीं भीमायै नमः। ॐ ह्रीं श्रीं भ्रामर्यै नमः। इत्यावरणं आवाहनमुद्रया आवाह्य॥ ॐ भगवती दुर्गेरक्षणकालिके इहागच्छ इहातिष्ठ सुप्रतिष्ठ वरदोभव। देवेशिभक्ति मूलेभ्ये परिवार समन्विते। यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं स्थिरोभवः॥

॥ अथनवदुर्गायंत्र पूजनम् ॥

अथ ध्यानम्-

सिंहस्कन्ध समारुढां नानालङ्कारभूषिताम्। चतुर्भुजां महादेवीं नागयज्ञोपवीतिनीम्॥
रक्तवस्त्र परीधानां बालार्क सदृशी तनुम्। नारदाद्यैर्मुनिगणैः सेवितां भवगेहिनीम्॥
त्रिवलीवलयोपेत नाभिनाल सुवेशिनीम्। रत्नद्वीपे महाद्वीपे सिंहासनसमन्विते।
प्रफुल्ल कमलारुढास्ध्यायेत् तां भवगेहिनीम् ॥

दीप मन्त्र-- (घृतदीपो भवेद्धाये तैलदीपस्तु वामत:। श्वैत वर्तिघृतदीपो तैलदीपं रक्तवर्तिस्तथा ॥)

श्री दीप देव रुपस्त्वं कर्मसाक्षिह्यविघ्नकृत । यावत्कर्म समाप्ति: स्यात् तावत्त्वं स्थिरो भव॥ श्री नवदुर्गा भगवती के यन्त्र में शक्तियों का पृथक-२ पूजन करें -

त्रिकोण के बीच में- **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥**

त्रिकोण के अग्नि कोण में- **ॐ सरस्वती सहिताय ब्रह्मणे नमः॥**

पश्चिम कोण में- **ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः॥** ईशान कोण में- **गौरीरुद्राय नमः॥**

अग्निकोण में- **अष्टादशभुजायै नमः॥** पश्चिम कोण में- **दशाननायै नमः॥** ईशान कोण में- **अष्टभुजायै नमः॥** षटकोण में पूर्वादि क्रम से- **ॐ नं नन्दजायै नमः । ॐ रं रक्तदन्तिकायै नमः । ॐ शां शाकम्भर्यै नमः । ॐ दुं दुर्गायै नमः । ॐ भीं भीमायै नमः । ॐ भ्रां भ्रामर्यै नमः । आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि नमः।** अष्टदल में पूर्व से- **ॐ ब्राँ ब्राह्मयै नमः । ॐ माहेश्वर्यै नमः । ॐ क्रौं कौमार्यै नमः । ॐ वैं वैष्णव्यै नमः । ॐ वां वाराह्यै नमः । ॐ नां नारसिंह्यै नमः । ॐ ऐं ऐन्द्रयै नमः। ॐ चां चामुण्डायै नमः। आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि न मम ।** चौबीस दलों में- **ॐ विं विष्णुमायायै नमः ॥१॥ ॐ चें चेतनायैनमः ॥२॥ ॐ हीं बुं बुद्धयै नमः ॥३॥ ॐ निं निद्रायै नमः ॥४॥ ॐ क्षुं क्षुधायै नमः ॥५॥ ॐ छां छायायै नमः ॥६॥ ॐ शं शक्त्यै नमः ॥७॥ ॐ तृं तृष्णायै नमः ॥८॥ ॐ क्षां क्षान्त्यै नमः ॥९॥ ॐ जां जात्यै नमः ॥१०॥ ॐ लं लज्जायै नमः ॥११॥ ॐ शां शांत्यै नमः ॥१२॥ ॐ श्रं श्रद्धायै नमः ॥१३॥ ॐ कां**

कान्त्यै नमः ॥१४॥ ॐ लं लक्ष्म्यै नमः ॥१५॥ ॐ धृं धृत्यै नमः ॥१६॥ ॐ वृं वृत्यै नमः ॥१७॥ ॐ श्रुं श्रुत्यै नमः ॥१८॥ ॐ स्मृं स्मृत्यै नमः ॥१९॥ ॐ तुं तुष्ट्यै नमः ॥२०॥ ॐ पुं पुष्ट्यै नमः ॥२१॥ ॐ दं दयायै नमः॥२२॥ ॐ मां मात्र्यै नमः ॥२३॥ ॐ भां भान्त्यै नमः॥२४॥ आवाहयामि स्थापयामि पूजायामि पाद्यादिनी समर्पयामि ॥

बहिभूगृह चतुष्कोणों में- ईशानकोण में- ॐ गं गणपतये नमः॥१॥अग्नि कोण में- ॐ क्षें क्षेत्रपालाय नमः ॥२॥ नैऋत्य में- ॐ बं बटुकाय नमः ॥३॥ वायव्य में- ॐ यों योगिनीभ्यो नमः ।

पुनः पूर्वादि अष्टभैरव पूजनम् ॥ पूर्व में- असिताङ्ग भैरवाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि न मम । आग्नेय में- रू रू भैरवाय नमः। दक्षिण में- चण्ड भैरवाय नमः। नैऋत्य में- क्रोध भैरवाय नमः। पश्चिम में- उन्मत भैरवाय नमः। वायव्य में- कपाल भैरवाय नमः। उत्तर में- भीषण भैरवाय नमः। ईशान में- संहार

भैरवाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि न मम । पूर्वादि दिशाओं में- इन्द्राय नमः। अग्नये नमः। यमाय नमः। निर्ऋतये नमः। वरुणाय नमः। वायवे नमः। सोमाय नमः। ईशानाय नमः। ब्रह्मणे नमः। अनन्ताय नमः। इसी प्रकार से - वज्राय नमः। शक्तये नमः। दण्डाय नमः। खड्गाय नमः। पाशाय नमः । अङ्कुशाय नमः। गदायै नमः। त्रिशूलाये नमः। पद्माय नमः। चक्राय नमः। इसी प्रकार से - वज्रहस्तायै गजारुढायै कादम्बरी दैव्यै नमः। शक्ति हस्तायै अजवाहनायै उल्का देव्यै नमः। दण्डहस्तायै महिषारुढायै करालो देव्यै नमः। खड्गहस्तायै शववाहनायै रक्ताक्षी देव्यै नमः । पाशहस्तायै मृगवाहनायै हरिताक्षी देव्यै नमः। गदाहस्तायै सिंहरुढायै यक्षिणी देव्यै नमः । शूलहस्तायै वृषभवाहनायै काली दैव्यै नमः। पद्महस्तायै हंसवाहनायै सुरज्येष्ठा देव्यै नमः। चक्रहस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराज्ञी देव्यै नमः। इत्यावाह्य यन्त्रस्थदेवताभ्यो नमः। इति मूलमन्त्रेण यथाशक्त्या यथोपलब्धोपचारैः पूजनं कुर्यात् । तत्रस्फटिकहेमताम्राद्यन्यतमः पात्रेपत्रेवा मूर्तौ अग्न्युतारणं यथाशक्ति गंधाष्टकेन

रक्तचन्दनेन वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ योनिमुद्रया प्रदर्श्य । ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वंशं षं सं हं सः अस्यां मूर्तौ प्राणः इह प्राणः ॥१॥ (पुनः मन्त्रः) जीवइहस्थितः ॥२॥ (पुनः मन्त्रः) सर्वेंद्रियाणीवाङमनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राण पाणि पाद पायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। एतन्तेति प्रतिष्ठाप्य मूलमन्त्रेणपाद्यादिभि संपूज्य। अथासनम्॥ सर्वदेवमयि देवि सर्वदा शिववल्लभे। देवि समर्पयं दिव्यं गृहाणासनमव्ययै॥ अथावाहनम्॥एहिदुर्गे महामाये रक्षार्थं मम सर्वदा। आवाहयाम्यहं देविसर्वकामार्थसिद्धये ॥ अस्यामूर्तौ समागच्छस्थितिमत्कृपा कुरु । रक्षाकुरु सदाभद्रे विश्वैश्वरि नमोस्तुते ॥ स्वागतं कुशलं पृष्टे महादेवि महेश्वरि । सुखागतं त्वधाभद्रे कृपयाभक्तवत्सले ॥ पाद्य॥ गंगादितीर्थसंभूता गंध पुष्पाक्षतैर्युतम् । पाद्यं गृहाण देवेशि नमस्ते त्रिपूरेश्वरि ॥ अर्घ्य॥ अष्टगंधसमायुक्ते स्वर्णपात्रे प्रपूरित। अर्घ्य ददाम्यहं तुभ्यं प्रसीदन्तु सुरेश्वरी ॥ आचमन॥सर्वलोकस्यथामाता देविलोकपाविनी । ददाम्याचमनं तस्यै महादेव्यै प्रयलतः ॥ मधुपर्क ॥ कपिलादधिकुन्देन्दुधवलै मधुसंयुतम्।

कांसपात्रस्थितं देवि मधुपर्कं गृहाणमे ॥ अथ पंचामृत ॥ पयोदधि घृतं चैव शर्करामध्
युसंयुतम् । पंचामृतं मयानित्यं गृहाणात्वं सुरेश्वरि ॥ पुनराचमनी ॥ कर्पूरावासितं
वारि निर्मलं शुद्धहेतुकम् । गृहाणं परमेशानि पुनराचमनीयकम् ॥ स्नान ॥ गंगादि
सर्वसंभूतं गंध पुष्पाक्षतैर्युतम् । स्नानंगृहाणदेवेशि तीर्थोदक समन्वितम् ॥
शुद्धोदकस्नान॥ सुगन्धिशालक्षणा चूर्णतथोद्धर्तनादिकम् । नानातीर्थोद्भवंतोयं स्नानियं
च गृहाणमे ॥ कंकणवस्त्रादिभूषण॥ रक्तकंकणवैडुर्य मुक्ताहारादिकानि च ।
सुप्रशनेमहादेविः वस्त्राभूषणानि गृहाणमे ॥ कंघा ॥ दंतिदंता समुत्पाद्य
विधिवद्विधिनाकृता । केशसंमार्जनार्थाय कंकनिगृह्णशैलजे । सुगंध॥ सुगंधि शीतलं
शुभ्रं नानागंधं समन्वितम् । प्रीत्यर्थं तव देवेशी सुगन्धि प्रतिगृह्यताम् ॥ चन्दन॥
चन्दनागरुकर्पूरं कुंकमाद्ये समन्वितम् । कस्तुरिलोचनं युक्तं गन्धदेविनमोस्तुते ॥
अक्षत ॥ अक्षतान् निर्मलान् शुद्धान् मुक्तामणि समन्विताम्। गृहाणेन महादेवी देहि
मे निर्मला मतिम् ॥ हरिद्रादि चूर्ण॥ हरिद्रारंजिते देवि! सुखसौभाग्यदायिनी। तस्मात्

त्वां पूजयाम्यत्र सुखं शान्तिं प्रयच्छमे ॥ सिंदूर॥ सिंदूरं सुदनं नित्यं महाशक्ति प्रियं सदा। प्रयच्छामि महादेवि सर्व सौभाग्य सुन्दरी ॥ पुष्प ॥ मालती मालिकादिनि सुगंधं कुशुमानि च । निवेदितां निवेदेशी समस्तापद्विनाशिनी ॥ पुष्पमाला ॥ रक्तश्वेतांबुजैर्मलिकादि विचित्रतैः। पुष्पमालां प्रयच्छामि प्रसिदन्तु सुरेश्वरी ॥ कुंकुम ॥ कुंकुमं शोभनं दिव्यं सर्वदा मंगलं प्रदम् । मया नित्यं महादेवि तुभ्यं दास्यामि सुन्दरिः ॥धूप॥ गुग्गलं स्मृतं चैव पञ्चसौंगन्ध्य संयुतम् । धूपं गृहाण देवेशि सदात्वं कुलवर्द्धिनी ॥ दीप ॥ तीर्थकोटिशतैर्माता यथा भवति निर्मलम् । करोति निर्मलं देहि धूपशेषं च वर्तिकाम् ॥ नीराजन॥ प्रज्वाल्यं देवदेवेशि कर्पूरैर्वतुदीपकम् । नीराजनं मयादत्तं गृहाण परमेश्वरी ॥ नैवेद्य॥ नानाविधिमिदं गृह्य नैवद्यं कृपयाशिवे। निवेदयामि नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ जुषाणेदं हरिप्रिये अन्नं चतुर्विधं स्वादुरसैर्षड्भि समन्वितम् । प्रसिद्धं देवदेवेशि नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ मूलेनाचमनिदत्वा ॥ हस्तमुखप्रक्षालनार्थे आचमनीयं समर्पयामि ॥ दक्षिणा ॥ हिरण्यं रजतं ताम्रं हीरादि मणिमंडितम् ।

दक्षिणा च मया देवि सुन्दरिशिववल्लभे ॥ ताम्बूल ॥ सुधाखदिर संयुक्तं नागबलिर्दलैर्युतम् । कर्पूरादि समायुक्तं तांबूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ फल ॥ इदं फलं मया देवि स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनिजन्मनि ॥ कदली नारीकेलादि पनसादि फलानि च । ऋतुभवानि देवीशि गृहाण परमेश्वरी ॥ नीराजन ॥ मंगले कालिके देवि महिषासुरमर्दिनी । नीराजनं मयादत्तं गृहाणेश्वरसुन्दरी । गौधूमपृष्ठ रचितं नवयोनिस्थितम् । शिवकर्पूरवार्तिक्या युक्तं आरार्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् ॥दर्पण ॥ दर्पणे निर्मले शुद्धि प्रतिबिम्ब तपिग्रहे । कुरु दृष्टि महामाये ममाभिष्ठ प्रसीदये ॥ चामर॥ शरदिंदुभरंचि गौरवर्णोर्मणि मुक्तार्विलसत्सुवर्णदंडैः । जगदेव विचित्रं चामरैस्त्यामहमानंदभरेण विजयामिः ॥ पुष्पांजलि ॥ दुर्गेदेवि नमस्तुभ्यं सकलासुरतासनि । पुष्पांजलिं गृहाण त्वं मयादत्तं सुरार्चितैः ॥ नमस्कारम॥ जयन्ती मंगलाकाली भद्रकाली कपालिनी । दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते ॥ सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते

☆ अथ दुर्गोपासनासिद्ध महाविद्यापाठ ☆

श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ अस्य श्रीनवदुर्गात्रिपुरसुन्दरी महामन्त्रस्य किरातरूपधर ईश्वर ऋषिः अनुष्टुप् छन्द अन्तर्यामी नारायणः किरातरूप धरेश्वरो नवदुर्गागायत्री देवता ॐ बीजं स्वाहा शक्तिः क्लीं कीलकं मम धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः ॥ हंसनी हां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ शङ्खिनी हीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ चक्रिणी हुं मध्यमाभ्यां नमः ॥ गदिनी हैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ शरिणी हौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ त्रिशूलधारिणी हः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथ हृदयादिन्यासः ॥ हंसिनी हां हृदयाय नमः । शङ्खिनी हीं शिरसे स्वाहा ॥ चक्रिणी हूं शिखायै वषट् ॥ गदिनी हैं कवचाय हुम् ॥शरिणी हौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ त्रिशूलधारिणी हः अस्त्राय फट् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वरोम् इति दिग्बन्धः ॥

अथ ध्यानम् ॥ अरिशङ्खकृपाणखेटबाणान्सुधनुष्कशूलमथ कर्तरीं दधाना ॥ भजतां

महिषोत्तमाङ्गसंस्था नवदूर्वासदृशी श्रियेऽस्तु दुर्गा ॥१॥ हेमप्रख्यामिन्दु खण्डान्तमौलिं शङ्खारिष्टाभीतिहस्तां त्रिनेत्राम् ॥ हेमाब्जस्थां पीतवर्णां प्रसन्नां देवीं दुर्गां दिव्यरूपां नमामि ॥२॥ ॐ सह नाववतु सह नौभुनक्तु सह वीर्यं करवावहै । तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ ॐ हरिः ॐ ॥ अथ पञ्चपूजा ॥ ॐ लं पृथिव्यात्मने गन्धं समर्पयामि ॥ ॐ हं आकाशात्मने पुष्पं समर्पयामि ॥ ॐ यं वाय्वात्मने धूपंसमर्पयामि ॥ ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं समर्पयामि ॥ ॐ वं अमृतात्मने अमृतनैवेद्यंसमर्पयामि ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उत्तिष्ठ पुरुष किं स्वपिषिभयं मे समुपस्थितम् ॥ यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय शमय स्वाहा ॥ ॐ नमश्चण्डिकायै नमः ॥ हेतुकं पूर्वपीठे तु आग्नेय्यां त्रिपुरान्तकम् ॥ दक्षिणे चाग्निवैतालं नैर्ऋत्यां यमजिह्वकम् ॥४॥ कालाख्यं वारुणे पीठे वायव्यां तु करालिनम् ॥ उत्तरे एकपादं तु ईशान्यां भीमरूपिणम् ॥५॥ आकाशे तु निरालम्बं

पाताले वडवानलम् ॥ यथा ग्रामे तथाऽरण्ये रक्ष मां बटुकस्तथा ॥ सर्वमंगलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥७॥ ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै नमः ॥ प्रयोगविषये ब्राह्मण्यै नमः ॥ वारुणि खल्वि माहेश्वर्यै नमः ॥ कुल्यवासिन्यै कुमारिण्यै नमः ॥ जयन्तीपुरलाहिवाराहिण्यै नमः ॥ अष्टमहाकालि माहेश्वर्यै नमः ॥ चित्रकुट इन्द्राण्यै नमः ॥ त्रिपुरब्रह्मचारिण्यै नमः॥ एकवृक्षशुम्भिण्यै महालक्ष्म्यै नमः ॥ त्रिपुरब्रह्माण्डनायक्यै नमः ॥ एतानि क्षं क्षं त्रैलोक्यवशंकराणि ॥ बीजाक्षराणि ॐ ह्रीं कुरु कुरु हुँ फट् स्वाहा ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सकलनरमुखभ्रमरीम् ॥ ॐ क्लीं ह्रीं सकलराजमुखभ्रमरीम् ॥ ॐ क्रौं सौं सकलदेवतामुखभ्रमरीम् ॥ ॐ क्लीं क्लीं सकलकामिनीमुखभ्रमरीम् ॥ ॐ ईं सौः सकल देशमुखभ्रमरीम् ॥ॐ ह्रीं क्लीं त्रैलोक्यचित्तभ्रमरीम् ॥ ॐ क्षं क्षां क्षिं क्षीं क्षुं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः ॥ उग्रभैरवादि भूतप्रेत पिशाच चित्त भ्रमरीं हुं क्षुं हुं क्लीं राजमन्त्रयन्त्रतन्त्र भ्रमरीं

हुं क्षुं क्लीं सिद्धमन्त्रयन्त्रतन्त्रभ्रमरीं हुं क्षुं हुं क्लीं साध्यमन्त्रयन्त्रतन्त्रभ्रमरीं सकल सुरासुर सर्व मन्त्र यन्त्र तन्त्र भ्रमरीं सर्वक्षोभिणी सर्वक्लेदिनी सकलमनोन्मादकरी आं ह्रीं क्रौं परमकल्याणी महायोगिनी ॥ ॐ महाविद्यांप्रवक्ष्यामि महादेवेन निर्मिताम् ॥ चिन्तितां किरातरूपेण मारणां हृदयनन्दिनीम् ॥८॥ उत्तमा सर्वविद्यानां सर्वभूतवशंकरी । सर्वपापक्षयकरी सर्वशत्रुनिवारिणी ॥ ॐ कुलकरी गोत्रकरी धनकरी धान्यकरी बलकरी यशस्करी विद्याकरी उत्साहबलवर्धिनी भूतानां विजृम्भिणी स्तम्भिनी मोहिनी द्राविणी सर्वमन्त्र प्रभञ्जिनी सर्वविद्या प्रभेदिनी सर्वज्वरोत्सादकरी ऐकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकमर्द्धमासिकं मासिकं द्विमासिकं त्रिमासिकं षाण्मासिकं सांवत्सरिकं वातिकं पैत्तिकं श्लैष्मिकं सान्निपातिकं सन्ततज्वरं शीतज्वरं उष्णज्वरं विषमज्वरं तापज्वरं च गण्डमाला लूततालु वर्णानां त्रासिनी सर्पाणां त्रासिनी सर्वान्त्रासिनी शिरः शूलाक्षिशूल कर्णशूल दन्तशूल बाहुशूल हृदयशूल कुक्षिशूल पक्षशूल गुदशूल

गुल्मशूल लिङ्गशूल योनिशूल पादशूल सर्वाङ्गशूल विस्फोटकादि इति आत्मरक्षा परोक्षरक्षा प्रत्यक्षरक्षा अग्निरक्षा अघोररक्षा वायुरक्षा उदकरक्षा महान्धकारोल्का विद्युदनिलचरोशस्त्रास्त्रे मां रक्ष रक्ष स्वाहा ॥ महादेवस्य तेजसां भयंकराविष्टदेवता बन्धयामि पन्थानुगतचौराद्रक्षते बन्धकस्य कण्टकं बन्धयामि महादेवस्य पञ्चशीर्षेण पाणिना महादेवस्य तेजसा सर्वशूलान्कहपिङ्गलेन कण्टक मयरुद्राङ्गी ॐ अं आं मातङ्गी इं ईं मातङ्गी उं ऊं मातङ्गी ऋं ॠं मातङ्गी लृं लॄं मातङ्गी एं ऐं मातङ्गी ओं औं मातङ्गी अं अः मातङ्गी स्वर स्वरबह्मदण्ड विश्वर विश्वर रुद्रदण्ड प्रज्वल प्रज्वल वायुदण्ड प्रहर प्रहर इन्द्रदण्ड भक्ष भक्ष निर्ऋतिदण्ड हिलि हिलि यमदण्ड नित्योपवादिनि हंसिनी शङ्खिनी चक्रिणी गदिनी शूलिनी त्रिशूलधारिणी हुं फट् स्वाहा ॥ आयुर्विद्यां च सौभाग्यं धान्यं च धनमेव च ॥ सदाशिवं पुत्रवृद्धिं देहि मे चण्डिकेशुभे ॥९॥ अथातो मन्त्रपादा भवन्ति ॥ ॐ छायायै स्वाहा ॥ चतुरायै

स्वाहा ॥ हलि स्वाहा ॥ पीलि स्वाहा ॥ पिलि स्वाहा ॥ हरं स्वाहा ॥ हरहरं स्वाहा ॥ गन्धर्वाय स्वाहा ॥ गन्धर्वाधिपतये स्वाहा ॥ यक्षाय स्वाहा ॥ यक्षाधिपतये स्वाहा ॥ रक्षसे स्वाहा ॥ रक्षोऽधिपतये स्वाहा ॥ ॐ भूः स्वाहा ॥ ॐ भुवः स्वाहा ॥ ॐ स्वः स्वाहा ॥ ॐ भुर्भूवः स्वः स्वाहा ॥ उल्कामुखी स्वाहा ॥ रुद्रमुखी स्वाहा ॥ रुद्रजटी स्वाहा ॥ ब्रह्मविष्णुरुद्रतेजसे स्वाहा ॥ या इमा भूतप्रेतपिशाच राक्षस नवग्रह भूतवेतालशाकिनीडाकिन्यः कूष्माण्डवासश्चत्वारो राजपुरुषः कलहपुरुषो वा तेषां दिशं बन्धयामि ॥ दुर्दिशो बन्धयामि ॥ हस्तौ बन्धयामि ॥ चक्षुषी बन्धयामि ॥ श्रोत्रे बन्धयामि ॥ जिह्वां बन्धयामि ॥ घ्राणं बन्धयामि ॥ बुद्धिं बन्धयामि ॥ गतिं बन्धयामि ॥ मतिं बन्धयामि ॥ अन्तरिक्षं बन्धयामि ॥ आकाशं बन्धयामि ॥ पातालं बन्धयामि ॥ यममुखेन पञ्चयोजनविस्तीर्णं बन्धयामि ॥ रुद्रो बध्नातु ॥ रुद्रमण्डलं रुद्रः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितं रुद्रमण्डलं

प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राज चौर सर्प सिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥१०॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥११॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ प्राच्यां दिशि इन्द्रो देवता ऐरावतारूढो हेमवर्णो वज्रहस्त इन्द्रो बध्नातु ॥ इन्द्रमण्डलमिन्द्रः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितमिन्द्रमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि ममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥१॥ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः । अस्माकमस्तु

केवलः ॥१॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्रायः नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय आग्नेय्यां दिशि अग्निर्देवता मेषारूढो रक्तवर्णो ज्वालाहस्तोऽग्निर्बध्नातु ॥ अग्निमण्डलमग्निः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितमग्निमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्रायराजचौरसर्पसिंहव्याघाग्निमम सर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥२॥ ॐ अग्निदूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् ॥ अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥१॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ याम्यां दिशि यमो देवता महिषारूढो नीलवर्णो दण्डहस्तो यमो बध्नातु यममण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम

सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्यमहावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि ममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥३॥ ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः ॥ यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः ॥१॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ नैर्ऋत्यां दिशि निर्ऋतिमण्डलं निर्ऋतिः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितं निर्ऋतिमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निमम सर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥४॥ ॐ मोषुणः परापरा निर्ऋतिर्दुर्हणावधीत् ॥ पदीष्ट तृष्णया सह ॥१॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव

ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय: नम: ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ वारुण्यां दिशि वरुणो देवता मकरारूढ: श्वेतवर्ण: पाशहस्तो वरुणो बध्नातु वरुणमण्डलं वरुण: सहपरिवारोदेवता प्रत्यधि देवतासहितं वरुण मण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघाग्नि ममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥५॥ हरि ॐ इमम्मे वरुण श्रुध ीहवमद्याश्मृडय ॥ त्वामव स्युराचके ॥१॥ ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भि:॥ अहेडमानो वरुणेह बोध्युरूश समानऽआयु: प्रमोषी: ॥२॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युत: ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥३॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नम:॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ वायव्यां दिशि वायुर्देवता मृगारूढो धूम्रवर्णोध्वजहस्तो वायुर्बध्नातु वायुमण्डलं वायु

सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवता सहितं वायुमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥६॥ ॐ तव वायवृतस्पते त्वष्टुर्जामातरद्भुत ॥ आवाँस्या वृणीमहे ॥१॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ कौबेर्यां दिशि कुबेरोदेवता अश्वारूढः पीतवर्णो गदाङ्कुशहस्तः कुबेरो बध्नातु कुबेरमण्डलं कुबेरः सहपरिवारो देवता प्रत्यधिदेवतासहितं कुबेरमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्र कवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि ममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥७॥ ॐ सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं

सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति ॥ सादन्यं विदथ्यं सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै ॥१॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ईशान्यां दिशि ईशानो देवता वृषारूढः स्फटिकवर्णस्त्रिशूलहस्तईशानो बध्नातु ईशान मण्डलमीशानः सहपरिवारो देवता प्रत्यधि देवतासहितमीशानमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्यमहावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥८॥ ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम् ॥ पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥१॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥

ऊर्ध्वायां दिशि ब्रह्मा देवता हंसारूढो रक्तवर्णः कमण्डलुहस्तो ब्रह्मा बध्नातु ब्रह्ममण्डलं ब्रह्मा सहपरिवारो देवता प्रत्यधिदेवतासहितं ब्रह्ममण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंह व्याघ्राग्नि ममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥१॥ ॐ ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम् ॥ श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन् ॥१॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ अधस्ताद्दिशि वासुकिर्देवता कूर्मारूढः पद्महस्तो वासुकिः बध्नातु वासुकिमण्डलं वासुकिः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवता सहितं वासुकिमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य

महावज्रकवचायास्त्रायराजचौरसर्पसिंह व्याघ्राग्निमम सर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥१०॥ ॐ नमोस्तु सर्प्पेब्यो ये केचपृथिवीमनु ॥ येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेब्य सर्प्पेब्यो नमः ॥१॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ अवान्तरस्यां दिशि विष्णुर्देवता गरुड़ारूढः श्यामवर्णश्चक्रहस्तौ विष्णुर्बध्नातु विष्णुमण्डलं विष्णुःसहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितं विष्णुमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि ममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥११॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा ॥१॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः॥ रोहन्तु

सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ प्राच्यां दिशि इन्द्रः सहपरिवारो देवताप्रत्यधि देवताद्दिक्षुत्रिशूलको नाम राक्षसः शाकिनीडाकिनीकाकिनीहाकिनीयाकिनीराकिनी वैतालकामिनी ग्रहान बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्यमहावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥१॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ आग्नेय्यां दिशि अग्निः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षुमारीचको नाम राक्षसस्तस्यअष्टादश कोटिभूतप्रेत पिशाचब्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिनीकाकिनी हाकिनीराकिनी याकिनीवैतालकामिनी ग्रहान् बन्धयामि मम सहपरिवारकस्य सर्वतो

मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि ममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥२॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय । याम्यां दिशि यमः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु एकपिङ्गलको नाम राक्षसस्तस्यअष्टादशकोटिभूत प्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिनीकाकिनीहाकिनी राकिनीयाकिनीवैतालकामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्यमहावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि ममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥३॥ ॐ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो

भगवते रुद्राय ॥ नैर्ऋत्यां दिशि निर्ऋतिः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु सत्यको नाम राक्षसस्तस्य अष्टादशकोटिभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिनी काकिनीहाकिनी राकिनीयाकिनीवैतालकामिनी ग्रहान बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्यमहावज्रकवचायास्त्राय राजिचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि ममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥४॥ ॐ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ प्रतीच्यां दिशि वरुणः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु लम्बको नाम राक्षसस्तस्याष्टादशकोटिभूतप्रेतपिशाच ब्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिनीकाकिनीहाकिनीराकिनीयाकिनीवैतालकामिनी ग्रहान बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय

राजचौरसर्पसिंह व्याघ्राग्नि ममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥५॥ ॐ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ वायव्यां दिशि वायुः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु प्रलम्बको नाम राक्षसस्तस्याष्टादश कोटिभूतप्रेतपिशाच ब्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिनीकाकिनी हाकिनीराकिनीयाकिनीवैतालकामिनी ग्रहान बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥६॥ ॐ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अब ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ कौबेर्यां दिशि कुबेरः सहपरिवारो

देवताप्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षुअश्वालकोनामराक्षसस्तस्याष्टादश कोटिभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षस शाकिनीडाकिनीकाकिनीहाकिनीराकिनीयाकिनीवैतालकामिनी ग्रहान बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि ममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ हां हीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं हीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥७॥ ॐ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युत: ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ईशान्यां दिशि ईशानः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु उन्मत्तको नाम राक्षसस्तस्याष्टादशकोटिभूतप्रेतपिशाच ब्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिनी काकिनीहाकिनीराकिनीयाकिनीवैतालकामिनी ग्रहान बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ हां

ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥८॥ ॐ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ॐ ऊर्ध्वायां दिशि ब्रह्मा सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु आकाशवासी नाम राक्षसस्तस्याष्टा दशकोटिभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिनीकाकिनी हाकिनीराकिनीयाकिनीवैताल कामिनी ग्रहान बन्धयामि मम सहपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमा क्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥९॥ ॐ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ अधस्तद्दिशि वासुकिः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु पातालवासी नाम

राक्षसस्तस्याष्टादश कोटि भूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षस शाकिनीडाकिनीकाकिनीहाकिनी राकिनीयाकिनीवैताल कामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंह व्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥१०॥ ॐ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ अवान्तरस्यां दिशि विष्णुः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतास्तद्दिशु महाभीमको नाम राक्षसस्तस्याष्टादशकोटि भूतप्रेतपिशाच ब्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिनी काकिनीहाकिनीराकिनीयाकिनीवैतालकामिनी ग्रहान बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्प सिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं

क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥११॥ ॐ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ प्राच्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते इन्द्राणिवज्रहस्ताभ्यां सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुं जटी स्वाहा॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ आग्नेय्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते अग्निज्वालहस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुं जटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ याम्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते यमकालदण्डहस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुं जटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ नैर्ऋत्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते निर्ऋतिखड्गकंकालहस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुं जटी स्वाहा

॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ वायव्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते वायविवेधहस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुं जटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ वारुण्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते वारुणिपाश हस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुं जटी स्वाहा॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ कौबेर्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते कौबेरीगदांकुशहस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुं जटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ईशान्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते ईशानित्रिशूलडमरुहस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुं जटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ऊर्ध्वायां दिशि ॥ ॐ नमो

भगवते ब्रह्माणि कमण्डल अक्ष सूत्रांकुशहस्तैः मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुं जटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ॐ नमो भगवते पातालवासिनि विषगर्लहस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुं जटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ अवान्तरस्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते श्रीमहालक्ष्मीपद्मारूढापद्महस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुं जटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ शिरो रक्षतु ब्रह्माणी मुखं माहेश्वरी तथा ॥ कण्ठं रक्षतु वाराही ऐन्द्री चैव भुजद्वयम् ॥१॥ चामुण्डा हृदयं रक्षेत्कुक्षिं रक्षेच्च वारुणी॥ वैष्णवी रक्ष पादौ मे पृष्ठदेशे धनुर्धरी ॥२॥ यथा ग्रामे तथा क्षेत्रे रक्षस्व मां पदे पदे ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥ शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते

॥ ३ ॥ ॐ ब्राह्मि माहेश्वरी कौमारि वैष्णवि वाराहि इन्द्राणि चामुण्डे सिद्धचामुण्डेश्वरी गणेश्वरि क्षेत्रपाल नारसिंहि महालक्ष्मि सर्वतो दुर्गे हुंफट् स्वाहा ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं हुं फट् ॥ कनकवज्रवैडूर्यमुक्तालंकृतभूषणे एहि एहि आगच्छ आगच्छ मम कर्णे प्रविश्य भूतभविष्यवर्तमानकाल ज्ञानदूरदृष्टिश्रवणं ब्रूहि ब्रूहि अग्निस्तम्भन शत्रुस्तम्भन शत्रुमुखस्तम्भन शत्रुगतिस्तम्भन शत्रुमतिस्तम्भन परेषांगति सर्वमतिशत्रूणां वाग्जृम्भणं स्तम्भनं कुरु कुरु शत्रुकार्यहानिकरि मम कार्यसिद्धिकरि शत्रूणामुद्योगविध्वंसकरि वीरचामुण्डि निहाटकहाटकधारिणी नगरीपुरीपट्टणआस्थानसंमोहनी असाध्यसाधिनी ॥ ॐ ह्रीं श्रीं देवि हन हुं फट् स्वाहा ॥ ॐ आं ह्रीं सौं ऐं क्लीं हूं सौः ग्लौं श्रीं क्रौं एहि एहि भ्रमराम्बा हि सकलजगन्मोहनाय मोहनाय सकलाण्डजपिण्डजान् भ्रामय भ्रामय जरा प्रजावशंकरि संमोहय संमोहय महामाये अष्टादशपीठरूपिणि अमलवरयूं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर कोटिसूर्यप्रभाभासुरिचन्द्रजटी मां रक्ष रक्ष मम शत्रून्

भस्मीकुरु भस्मीकुरु विश्वमोहिनी हुं क्लीं हुं हुं फट् स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते कामदेवाय इन्द्राय वसाबाणाय इन्द्र संदीपबाणाय क्लीं क्लीं संमोहनबाणाय ब्लूं ब्लूं संतापनबाणाय सः सः वशीकरणबाणाय कम्पित कम्पित हुं फट् स्वाहा ॥ क्लीं नमो भगवते कामदेवाय श्रीं सर्वजनप्रियाय सर्वजनसंमोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हन हन वद वद तप तप संमोहय संमोहय सर्व जनं मे वशं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ॐ नमो विष्णवे ॥ ॐ नमो नारायणाय ॥ ॐ जय जय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा ॥ सहस्रार ज्वालावर्त हन हन हुं फट् स्वाहा ॥ ॐ तत्सवितुर्वरिण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ॥ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ श्रीमन्नारायणस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ श्रीमते नारायणाय नमः ॥ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम् ॥ नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्यमृत्युंनमाम्यहम् ॥४॥ भगवन् सर्वविजय सहस्राराय राजित ॥ शरणं त्वां प्रपन्नोऽस्मि श्रीकरं श्रीसुदर्शनम ॥५॥ अरुणी वारुणी चैव

सविग्रहनिवारिणी ॥ सर्वकर्मकरि ॥ ॐ भूः स्वाहा ॥ ॐ भुवः स्वाहा ॥ ॐ स्वः स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा ॥ अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यक ग्राहयित्वा ॥ ततो महाविद्या सिध्दयति ॥ अशिक्षितं नोपयुञ्जीत् ॥ अहं न जाने न च पार्वतीश एकविंशतिवाराणि परिजाप्य शुचिर्भवेत् ॥६॥ पत्रं पुष्पं फलं दद्यात् स्त्रियो वा पुरुषोऽपि वा ॥ अवश्यं वशमित्याहुरात्मना च परेण वा ॥७॥ महाविद्यावतां पुंसां मनः क्षेत्रं करोति यः ॥ सप्तरात्रौ व्यतीतायां शत्रूणां तद्विनश्यति ॥८॥ ॐ कुबेर ते मुखं रौद्रं नन्दिमानन्दिम वह॥ ज्वरं मृत्युभयं घोरं विषंनाशय मे ज्वर ॥९॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय हृदये अमृताभिवर्षाय मम ज्वररोग शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ॐ कालकाल महाकाल कालदण्ड नमोऽस्तुते ॥ कालदण्डनिपातेन भूम्यामन्तर्हितं ज्वरं हन्ति ॥ लिखित्वा यस्तु पश्यति समुद्रस्योत्तरे तीरे मारीचो नाम राक्षसस्तस्य मूत्रपुरीषाभ्यां हुताशनं शमय शमय स्वाहा ॥ हिमवत्युत्तरे पार्श्वे चपला नाम यक्षिणी ॥ तस्या

नूपुरशब्देनविशल्या भव गर्भिणी ॥ जातवेदसे सुन वाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः ॥ स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरिताऽत्यग्निः ॥१०॥ भास्कराय विद्महे महद्द्युतिकराय धीमहि । तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ॥१॥ ॐ तत्सवितर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ प्रतिकूलकारिणी नश्येत् ॥ अनुकूलकारिणी अस्तु ॥ महादेवी च विद्ममहे विष्णुपत्नी च धीमहि ॥ तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥२॥ ॐ ब्रूं ह्रीं श्रीं ब्रह्मकोशजी मां रक्ष रक्ष हुं जटी स्वाहा ॥ पञ्चम्यां च नवम्यां च दशम्यां च विशेषतः ॥ पठित्वा तु महाविद्यां श्रीकामः सर्वदा पठेत् ॥११॥ ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् । श्रीर्मे भजतु ॥ अलक्ष्मीर्मे नश्यतु ॥ यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह ॥ पवमानवितज्जहि ॥ यदुत्थितं दुःखं भवति तत्सर्वं शमय शमय स्वाहा ॥ ॐ गायत्र्यै स्वाहा ॥ ॐ सावित्र्यै स्वाहा ॥ ॐ सरस्वत्यै स्वाहा ॥

तत्पुरुषाय विद्महे सहस्राक्षाय धीमहि ॥ तन्न इन्द्रः प्रचोदयात् ॥३॥ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥४॥ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥५॥ तत्पुरुषाय विद्महे चक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो नन्दिः प्रचोदयात् ॥६॥ तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि । तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात् ॥७॥ तत्पुरुषाय विद्महे सुवर्णपक्षाय धीमहि । तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ॥८॥ वेदात्मनाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि । तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् ॥९॥ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि । तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥१०॥ मन्मथेशाय विद्महे कामदेवाय धीमहि । तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयात् ॥११॥ वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि । तन्नो नारसिंहः प्रचोदयात् ॥१२॥ भास्कराय विद्महे महद्द्युतिकराय धीमहि । तन्नो आदित्यः प्रचोदयात् ॥१३॥ वैश्वानराय विद्महे लालीलाय धीमहि । तन्नो अग्निः प्रचोदयात् ॥१४॥ कात्यायनाय विद्महे कन्यकुमारिध

ीमहि । तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात् ॥१५॥ सहस्रपरमा देवी शतमूला शतांकुरा । सर्वहरतु मे पापं दूर्वा दुःस्वप्ननाशिनी ॥१२॥ ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परूषस्परि । एवानोदूर्व्वे प्रतनुसहस्रेण शतेन च ॥ अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे । शिरसाधारयिष्यामि रक्षस्व मां पदे पदे ॥१३॥ अत्रिणा त्वा क्रिमे हन्मि कण्वेन जमदग्निना । विश्वावसोर्ब्रह्मणा हतः कृमीणांराजा अप्येषांस्थपतिर्हतः ॥ अथो माताऽथो पिता अथो स्थूरा अथो क्षुद्राः अथो कृष्णाः अथो श्वेताः अथो आशातिका हताः श्वेताभिः सह सर्वे हताः आहरावद्य श्रुतस्य हविषो यथा तत्सत्यं यदमुंयमस्य जम्भयोः आदधामि तथा हि तत् ॥ खण्फण्प्रसि ब्रह्मणा त्वा शपामि ॥ ब्रह्मणस्त्वा शपथेनशपामि ॥ घोरेण त्वा भृगूणां चक्षुषां प्रेक्षे॥ रौद्रेण त्वाऽङ्गिरसा मनसा ध्यायामि ॥ अघस्यत्वा धारया विध्यामि ॥ अधरो मत्यद्यस्वासौ उत्तुद शिमिजा वरि तल्पेजे तल्प उत्तुद गिरींरनुप्रवेशय मरीचीरुपसंनुद यावदितः पुरस्तादुदयाति

सूर्यः तावदितोऽमुंनाशय योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः खट् फट् जहि छिन्धि भिन्धि हन्धि कट् इति वाचः क्रूराणि परिवाहिणीदं नमस्ते अस्तु मा मा हिंसीः द्विषन्तं मेऽभिनाशय तं मृत्यो मृत्यवे नय अरिष्टं रक्ष अरिष्टं भञ्ज भञ्ज स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं कृष्णवाससे नारसिंहवदेमहाभैरवि ज्वलज्वलविद्युज्जवलज्ज्वाला जिह्वेकरालवदने प्रत्यङ्गिरे नमोनारायणाय घ्रिणुः सूर्यादित्योंसहस्रा हुं फट् ॥ अव ब्रह्मा द्विषो जहि ॥ सर्पोलूककाककङ्ककपोतादि वृश्चिकोग्रदंष्ट्रा करोग्रविषान्मे महाभूतप्रेतपिशाच ब्रह्मराक्षस सकलकिल्विषादिमहारोग विषान्निरोगविषं कुरु कुरु स्वाहा॥ अक्षिस्पन्दं च दुःस्वप्नं भुजस्पन्दं च दुर्मतिम् ॥ दुश्चिह्नं दुर्गतिं रोगं भयंनाशय शांकरि ॥१४॥ महाविद्यां कृतवतो योस्माकं द्वेष्टि योऽरिष्टं स्मरति यावदेकविंशतिं कृत्वा तावदधिकं नाशय ॥ ब्रह्मविद्यामिमां देवि नित्यं सेवेत यः सुधीः ॥ ऐहिकामुष्मिकं सौख्यं सिद्ध्यत्येव न संशयः॥१५॥ एनांविद्यां महाविद्यां यो दूषयति मानवः॥

सोऽवश्यंनाशमाप्नोतिषण्मा सादचिरेणवै ॥१६॥ अग्रतः पृष्ठतः पार्श्वे ऊर्ध्वतो रक्षमे सदा॥ चण्डघण्टा विरूपाक्षी त्वांभजे जगदीश्वरीम् ॥१७॥ एवंविद्यां महाविद्यांत्रिसन्ध्यं स्तौति मानवः॥ दृष्ट्वा जनैर्दुष्टजनाः सर्वमोहवशं गताः ॥१८॥ तामग्नि वर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् ॥ दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरां दुःशमनायै नमः ॥१९॥ मातर्मे मधुकैटभघ्नि महिषप्राणापहारोद्यमे हेलानिर्मितधूम्रलोचनवधे हे चण्डमुण्डार्दिनि ॥ निःशेषीकृतरक्तबीजदनुजे नित्ये निशुम्भापहे शुम्भध्वंसिनि संहराशु दुरितं दुर्गे नमस्तेऽम्बिके ॥२०॥ कालदण्डपरंमृत्युविजया बध्नयाम्यहम् ॥ पञ्चयोजनविस्तीर्णं मृत्योश्च मुखमण्डलम् ॥ तस्माद्रक्ष महाविद्ये भद्रकालि नमोऽस्तुते ॥२१॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ वारिजलोचनसहपारीगतिं वारयासुरकर निकरैः पूरितमेघद्रुगानां दापितागोपकन्यके सहोदरवतु ॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिद्धलक्ष्मी स्वाहा ॥ ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ आवहन्ती

वितन्वाना कुर्वाणा चीरमात्मनः ॥ वासांसि मम गावश्च अन्नपाने च सर्वदा ॥ ततो मे श्रिय आनिरियाय श्रियं वयो जरितृभ्यो दधाति ॥ श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवन्ति सत्या समिथा मितद्रौ श्रिय एवैनं तच्छ्रियामादधाति संतत मृचा वषट्कृत्यं संतत्यै संधीयते प्रजया पशुभिर्य एवं वेद ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्लूं प्रो ह्रुं फट् स्वाहा॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै तेजस्वि नाव धीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥ ॐ परिमाणं महाविद्या महादेवस्य सन्निधौ। एकविंशति वारेण अवश्यं सिद्धिमालभेत्। यदि सिद्धयति नो विद्या तदुद्रो ब्रह्म भवेत् । अष्टाभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दद्यात् अवश्यं सिद्धिमालभेत् । ॥ श्री ॥ स्त्री वा पुरुषो वाऽपि पापं भस्मसमाचरेत्। प्रायणं स्तम्भनं चैव मारणम् ग्रहनिवारणम्। सर्वं बीजस्य सिद्धिः स्यात् शान्तिकर्मणि विशेषतः।

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

॥ क्षमा प्रार्थना ॥

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया । दासोऽयमिति मां मत्वाक्षमस्व परमेश्वरि ॥ १ ॥ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् । पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ॥ २ ॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि। यत्पूजितं मयादेवि परिपूर्णं तदस्तुमे ॥ ३ ॥ अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेतिच्चोच्चरेत् । यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ॥ ४ ॥ सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके । इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु ॥ ५ ॥ अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकंकृतम् । तत्सर्वक्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ ६ ॥ कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्द विग्रहे। गृहाणार्चामिमांप्रीत्याप्रसीदपरमेश्वरि ॥ ७ ॥ गुह्यति गुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि ॥ ८ ॥

॥ श्री दुर्गार्पणमस्तु ॥

॥ इति श्रीदुर्गोपासना सिद्ध महाविद्या पाठ सविधि समाप्ता: ॥

सर्वाधिकार प्रकाशनाधीन
वाणी भूषण प्रकाशन, ऋषिकेश, देहरादून (उत्तराखण्ड)

श्री रुद्रचण्डी पाठ

दुर्गा कल्पद्रुम के त्रयोदश प्रकरण रुद्रयामलोक्त में भगवान शिव, पार्वती जी से श्रीरुद्रचण्डी पाठ का महात्म्य वर्णन करते हैं कि हे! पार्वती, जो भक्त श्रद्धापूर्वक श्रीरुद्रचण्डी पाठ ब्राह्मण द्वारा श्रवण करते हैं, उन्हें देवी की कृपा से अनन्त फल की प्राप्ति होती है। रविवार के दिन पाठ करने से नवावृति पाठ की फल प्राप्ति होती है। सोमवार के दिन पाठ करने से सहस्त्रावृति फल की प्राप्ति होती है। मंगलवार के दिन पाठ करने से शतावृति फल की प्राप्ति होती है। बुधवार के दिन पाठ करने से लक्षावृति फल की प्राप्ति होती है। गुरुवार के दिन दो लक्षावृति फल की प्राप्ति होती है। शुक्रवार के दिन पाठ करने से ज्ञेय तुल्य फल की प्राप्ति होती है। शनिवार के दिन पाठ करने से कोटयावृति फल की प्राप्ति होती है। इस प्रकार हे! देवी, जो भक्त श्रद्धापूर्वक श्री रुद्रचण्डी पाठ और श्रवण करते हैं उनकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती है और कायिक, वाचिक, मानसिक पाप नष्ट हो जाते हैं। दैविक, दैहिक और भौतिक तीनों प्रकार के कष्ट तत्काल नष्ट हो जाते हैं। योग और मोक्ष की प्राप्ति होती है। श्री रुद्रचण्डी पाठ अथवा श्रवण मात्र से शीघ्र धन-धान्य, वस्त्र, रत्न-आभूषण, आरोग्य, विजय, सौख्य आदि सभी मनोकामना पूर्ण हो जाती है तथा समस्त ऋण, कष्ट, भूत-प्रेतादि अनेक प्रकार की बाधाएं दूर हो जाती है। रोग और शत्रु का नाश हो जाता है। विशेष शनिवार के दिन श्रीरुद्रचण्डी पाठ करने से अनन्त फल की प्राप्ति होती है। प्रयाग में मुण्डन कराने से, हरिद्वार में गंगा स्नान करने से, त्रिगया त्रिकाक्यां श्री विश्वनाथ जी के दर्शन से, मणिदान, तुलादान, स्वर्णदानादि से जो पुण्य प्राप्त होता है, वही श्री रुद्रचण्डी पाठ श्रवण मात्र से ही फल प्राप्त हो जाता है और जन्म जन्मान्तर के पाप-ताप नष्ट हो जाते हैं। श्री रुद्रचण्डी पाठ से धन, पुत्र-पौत्रादि तथा समस्त ऐश्वर्य, राज्यादि फल की प्राप्ति होती है। जो अश्रद्धा से पाठ या महात्म्य श्रवण करता है, वह रोगादि होकर नरक कुण्डों में गिर जाता है। जो श्रद्धापूर्वक श्री रुद्रचण्डी पाठ या महात्म्य श्रवण करता है वह इस लोक में समस्त ऐश्वार्यादि सुखों को भोगकर परमपद (मोक्ष) को चला जाता है, इसमें किंचित मात्र भी संशय नहीं है।

श्री रुद्रचण्डी पाठ

॥ श्री शंकर उवाच ॥

चण्डिकाहृदयं न्यस्य शरणं यः करोत्यपि । अनन्तफलमाप्नोति देवीचण्डी प्रसादतः ॥१॥
रविवारे यदा चण्डीं पठेदागमसंमताम् । नवावृति फलं तस्य जायते नात्र संशयः॥२॥
सोमवारे यदा चण्डीं पठेद्यस्तु समाहितः। सहस्त्रावृत्तिपाठस्य फलं जानीहि सुव्रते॥३॥
कुजवारे जगद्धात्रीं पठेदागमसंमत्ताम् । शतावृत्तिफलं तस्य बुधे लक्षफलं ध्रुवम ॥४॥
गुरौ यदि महामाये लक्षयुग्म फलं ध्रुवम् । शुक्रे देवी जगद्धात्री चण्डीपाठेन शंकरि ॥५॥
ज्ञेयं तुल्यफलं दुर्गे यदि चण्डि समाहितः। शनिवारे जगद्धात्रि कोट्यावृत्तिफलं ध्रुवम् ॥६॥
अत एव महेशानि यो वै चण्डीं समभ्यसेत्। स सद्यश्च कृतार्थश्च राजराजाधिपो भवेत् ॥७॥
आरोग्यं विजयं सौख्यं वस्त्ररत्नप्रवालकम् । पठनाच्छ्रवणाच्चैव जायते नात्र संशयः ॥८॥
धनं धान्यं प्रवालं च वस्त्रं रत्न विभूषणम् । चण्डीश्रवणमात्रेण कुर्यात्सर्वेमहेश्वरी ॥९॥
घोरचण्डी महाचण्डी चण्डमुण्डविखण्डिनी । चतुर्वक्त्रा महावीर्या महादेवविभूषिता ॥१०॥
रक्तदन्ता वरारोहा महिषासुरमर्दिनी । तारणी जननी दुर्गा चण्डिका चण्डविक्रमा ॥११॥
गुह्यकाली जगद्धात्री चण्डी च यामलोद्भवा। श्मशानवासिनीदेवी घोरचण्डी भयानका ॥१२॥

शिवा घोरा रुद्रचण्डी महेशगणभूषिता । जाह्नवी परमा कृष्णा महात्रिपुरसुन्दरी ॥ १३ ॥
श्रीविद्या परमा विद्या चण्डिका वैरिमर्दिनी। दुर्गादुर्गशिवा घोराचण्डहस्ता प्रचण्डिका ॥ १४ ॥
माहेशी बगला देवी भैरवी चण्डविक्रमा। प्रमथैर्भूषिता कृष्णा चामुण्डा मुण्डमर्दिनी ॥ १५ ॥
रणखण्डा चन्द्रघण्टा रणरामवरप्रदा । भारणी भद्रकाली च शिवाघोरभयानका ॥ १६ ॥
विष्णुप्रिया महामाया नन्दगोपागृहोद्भवा । मंङ्गला जननी चण्डी महाक्रुद्धभयंकरी ॥ १७ ॥
विमला भैरवी निद्रा जातिरूपा मनोहरा । तृष्णा निद्रा क्षुधा मायाशक्तिर्माया मनोहरा ॥ १८ ॥
तस्यै देव्यै नमस्तस्यै सर्वरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १९ ॥
इमां चण्डी जगद्धात्रीं ब्राह्मणस्तु सदा पठेत् । नान्यांस्तु पाठयेद्देविपठेन ब्रह्महा भवेत् ॥ २० ॥
यः श्रृणोति धरायां च मुच्यते सर्वपातकैः । ब्रह्महत्या च गोहत्यास्त्रीवधोद्भवपातकम् ॥ २१ ॥
श्वश्रूगमनपापं च कन्यागमनपातकम् । तत्सर्वं पातकं दुर्गे मातृगमनपातकम् ॥ २२ ॥
सुतस्त्रीगमने चैव यद्यत्पापं प्रजायते । परदारकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति ॥ २३ ॥
जन्मजन्मान्तरात्पापाद् गुरुहत्यादिपातकम् । मुच्यते मुच्यते देवि गुरुपत्निसुसंगमात् ॥ २४ ॥
मनसा वचसा पापं यत्पापं ब्रह्महिंसने। मिथ्यायाश्चैव यत्पापं नश्यति सर्वतत् क्षणात् ॥ २५ ॥
श्रवणं पठनं चैव यः करोति धरातले । स धन्यश्च कृतार्थश्च राजराजधिपो भवेत् ॥ २६ ॥

यः करिष्यत्यविज्ञाय रुद्रयामलचण्डीकाम् । पापैरेतैः समायुक्तो रौरव नरकं व्रजेत ॥२७॥
अश्रद्धया च कुर्वन्ति ते च पातकिनो नराः। रौरवं नरकं कुण्डं कृमिकुण्डं मलस्य वै ॥२८॥
शुक्रस्य कुण्डं स्त्रीकुण्डं यान्ति ते ह्यचिरेण वै । ततः पितृगणैः सार्धे विष्ठायां जायते कृमिः॥२९॥
श्रृणु देवि महामाये चण्डीपाठं करोति यः। गङ्गायां चैवयत्पुण्यंकाश्यांविश्वेश्वराग्रतः ॥३०॥
प्रयागे मुण्डने चैव हरिद्वारे हरेर्गृहे । तस्य पुण्यं भवेद्देवि सत्यं दुर्गे रमे शिवे ॥३१॥
त्रिगयायां त्रिकाश्यां वै यच्च पुण्यं समुत्थितम् । तच्चपुण्यंतच्चपुण्यंतच्च पुण्यं न संशय ॥३२॥
भवानी च भवानी च भवानी चोच्यते बुधैः। भकारस्तु भकारस्तुभकारःकेवलः शिवः ॥३३॥
वाणी चैव जगद्धात्री वरारोहे भकारकः । प्रेतवद्देवि विश्वेशि भकारः प्रेतवत्सदा ॥३४॥
आरोग्यं च जयं पुण्यं मातः सुखविवर्धनम् । धनं पुत्रजरारोग्यं कुष्ठं गलितनाशनम् ॥३५॥
अर्शोगरोगान्मुच्येत दद्रुरोगाच्च पार्वति । सत्यं सत्यं जगद्धात्री महामाये शिवे शिवे ॥३६॥
चण्डे चण्डि महारावे चण्डिकाव्याधिनाशिनी। मन्दे दिने महेशानि विशेषफलदायिनी ॥३७॥
सर्वदुःखाद्विमुच्येत भक्त्याचण्डीं श्रणोति यः। ब्राह्मणो हितकारीच पठे न्नियतमानसः ॥३८॥
मङ्गलं मङ्गलं ज्ञेयं मङ्गलं जयमङ्गलम् । भवेद्धि पुत्रपौत्रेश्च कन्यादासादिभिर्युतः ॥३९॥
तत्वज्ञानेन निधनकाले निर्वाणमाप्नुयात् । मणिदानोद्भवं पुण्यं तुलाहिरण्यके तथा ॥४०॥

चण्डीश्रवणमात्रेण पठनाद्ब्राह्मणोऽपि च । निर्वाणमेति देवेशि महास्वस्त्ययने हितः ॥४१॥
सर्वत्र विजयं याति श्रवणाद्ग्रहदोषतः । मुच्यते च जगद्धात्रि राजराजाधिपो भवेत् ॥४२॥
महाचण्डी शिवाघोरा महाभीमा भयानका। काञ्चनी कमला विद्या महारोगविमर्दिनी ॥४३॥
गुह्यचण्डी घोरचण्डी चण्डी त्रैलोक्यदुर्लभा । देवानां दुर्लभा चण्डी रुद्रयामलसंमता ॥४४॥
अप्रकाश्या महादेवी प्रिया रावणमर्दिनी । मत्स्यप्रिया मांस रता मत्स्यमांसबलिप्रिया ॥४५॥
मदमत्ता महानित्या भूतप्रमथसंगता । महाभागा महारामा धान्यदा धनरत्नदा ॥४६॥
वस्त्रदा मणिराज्यादिसदा विषयवर्द्धिनी । मुक्तिदा सर्वदा चण्डीमहाविपदनाशिनी ॥४७॥
इमां हि चण्डीं पठते मनुष्यः शृणोति भक्त्या परमां शिवस्य ।
चण्डीं धरण्या मति पुण्य युक्तां। सवैन गच्छेत्पर मन्दिरं किल ॥४८॥
जप्यं मनोरथं दुर्गे तनोति धरणी तले। रुद्रचण्डीप्रसादेन किं न सिध्यति भूतले ॥४९॥
रुद्रध्येया रुद्ररूपा रुद्राणी रुद्रवल्लभा । रुद्रशक्ति रुद्ररूपा रुद्रमुखसमन्विता ॥५०॥
शिवचण्डी महाचण्डी शिवप्रेतगणान्विता । भैरवी परमा विद्या महाविद्या च षोडशी ॥५१॥
सुन्दरी परमा पूज्या महात्रिपुरसुन्दरी । गुह्यकाली भद्रकाली महाकाल विमर्दिनी ॥५२॥
कृष्णा तृष्णा स्वरूपा सा जगन्मोहनकारिणी । अतिमन्त्रा महालज्जा सर्वमंगलदायिनी ॥५३॥

घोरतन्त्री भीमरूपा भीमा देवी मनोहरा । मंगला बगला सिद्धिदायिनी सर्वदा शिवा ॥५४॥
स्मृतिरूपा कीर्तिरूपा योगार्द्धैरपि सेविता । भयानका महादेवी भयदु:खविनाशिनी ॥५५॥
चण्डिकाशक्तिहस्ता च कौमारी सर्वकामदा । वाराही च वराहास्याइन्द्राणिशक्र पूजिता ॥५६॥
माहेश्वरी महेशस्य महागणविभूषिता । चामुंडा नारसिंही च नृसिंहशत्रुमर्दिनी ॥५७॥
सर्वशत्रुप्रशमनी सर्वारोग्यप्रदायिनी । इति सत्यं महादेवि सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥५८॥
नैव शोकं नैव रोगं नैव दु:खं भयं तथा । आरोग्यमङ्गलंनित्यंकरोतिशुभमंगलम् ॥५९॥
महेशानिवरारोहे ब्रवीमि सत्य मुत्तमम् । अभक्ताय न दातव्यंममप्राणाधिकंशुभम् ॥६०॥
तवभक्ताय शान्ताय शिवविष्णु प्रियाय च। दद्यात्कदाचिद्देवेशि सत्यंसत्यं महेश्वरि ॥६१॥
अनन्तफलमाप्नोति शिवचण्डीप्रसादत:। अश्वमेधवाजपेयराजसूयशतानि च ॥६२॥
तुष्टाश्च पितरो देवास्तथा च सर्वदेवता: । दुर्गेयं मृन्मयी ज्ञानं रुद्रयामलपुस्तकम् ॥६३॥
मन्त्रमक्षरसंज्ञानं करोत्यपि नराधम:। अत एव महेशानि किं वक्ष्ये तव सन्निधौ ॥६४॥
लम्बोदराधिकश्चण्डीपठनाच्छ्रवणात्तु य:। तत्त्वमस्यादिवाक्येनमुक्तिंप्राप्नोतिदुर्लभाम् ॥६५॥

इति श्री ह० बृ० धर्म० उपा० स्त० श्रीदुर्गोपाठध्यायेरुद्रयामलोक्त

श्रीरुद्रचण्डीनिरूपणं नाम त्रयोदशं प्रकरणम् ॥